खंड संख्या 2. अंक संख्या 6 वीवा समाचार पत्रिका (हिंदी मासिक)

# विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ वैल्यूज़ (वीवा)

## सभी के लिए व्यावहारिक आध्यात्मिकता

*"समाज एवं जीवन का केंद्र एक गृहस्थ है।"*
*स्वामी विवेकानंद*

### अंतर्मुखी होना - "पिता का विशिष्ट महत्व"

माताओं के भरपूर प्रेम, देखभाल और पोषण की बहुधा प्रशंसा की जाती है। सामान्यतः परिवार के संरक्षण और भौतिक वस्तुओं को उपलब्ध कराने के फलस्वरूप पिता को सम्मानित किया जाता है। हमारे मतानुसार एक पिता उतने ही स्नेही हो सकते हैं जितनी कि एक माता होती हैं, किन्तु परिस्थितियों के अनुसार ढलने के कारण संभवतः वह अपने प्रेम को तत्परता से व्यक्त नहीं करते। पिता का योगदान आर्थिक स्थिरता प्रदान करने से कहीं अधिक है। प्रतिदिन के आचरण एवं हाव-भाव से पिता अपनी संतान में आत्म-श्रद्धा का गठन करते हैं। हम अभिवादन करते हैं- उन पिताओं का जो अपनी संतान को उनके पैरों पर खड़े होने में सहायता करते हैं, उन एकल पिताओं का जो परवरिश की विशाल चुनौती को अपने कन्धों पर लेते हैं और उन पिता तुल्य मार्गदर्शकों का जिनके प्रोत्साहन के कारण हम भविष्य का सामना आत्मविश्वास एवं साहस से करते हैं।

- सम्पादकीय टीम

### पितृत्व: संतान में संस्कार अंतर्निविष्ट करना - दिल्ली से हर्षित सोनी

संतान के चरित्र एवं संस्कारों के गठन में पिता का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बच्चों को मार्गदर्शन, भरण-पोषण एवं आवश्यक जीवन मूल्यों को प्रदान करने में माता के साथ-साथ पिता की भूमिका भी अत्यंत अर्थपूर्ण है। बच्चे के समग्र विकास में पिता की उपस्थिति और सहभागिता का विशिष्ट महत्व है। संतान के लिए पिता प्रेरणास्रोत होते हैं, उनके आचरण और व्यवहार का बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, सहानुभूति और सम्मान जैसे जीवन मूल्यों के लगातार अनुसरण एवं प्रदर्शन से पिता अपने बच्चों को इनका महत्व दर्शाते हैं।

संस्कारों को बच्चों के मन में बैठाने के लिए पिता का उनके साथ प्रभावी संवाद अत्यावश्यक है। संतान के साथ वार्तालाप में पिता नैतिक असमंजस, नीतिपरक चयन, कार्यों के परिणाम आदि विषयों पर चर्चा कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पिता खुले संवाद के लिए प्रोत्साहित कर जटिल परिस्थितियों के समाधान के लिए मार्गदर्शन कर सकते हैं और संवेदना, सहनशीलता एवं निष्पक्षता के महत्व पर बल दे सकते हैं। प्रभावशाली श्रवण भी उतना ही आवश्यक है क्योंकि यह पिता को अपनी संतान के दृष्टिकोण को समझने के लिए सक्षम बनाता है। साथ ही, जीवन मूल्यों एवं नैतिक असमंजस पर प्रश्नों के उत्तर देने का और किसी भी तरह की चिंताओं का समाधान करने का अवसर देता है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था,"यदि मेरी कोई संतान होती तो मैं जन्म से ही उसे बताना प्रारम्भ कर देता, 'तुम ही वह पवित्र आत्मा हो'।* एक पिता अपनी संतान को उसके आध्यात्मिक स्वभाव को गहराई से समझने के लिए पथप्रदर्शन कर सकते हैं और अंतरात्मा की खोज करने और उससे सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं। इसके साथ-साथ भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक परम्पराओं के विषय में ज्ञान दे सकते हैं और आत्मचिंतन, प्रेम, करुणा, वैश्विक समरसता जैसे जीवन मूल्यों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, पिता अपने बच्चों में, समाज के प्रति योगदान देने के मूल्य को उनके मन में बैठा सकते हैं और दूसरों के प्रति संवेदना की भावना को विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। दया और प्रेम के कार्यों से, दीन-हीन की सेवा से, सामाजिक न्याय को बढ़ावा देकर, पिता अपनी संतान को एक परोपकारी, ज़िम्मेदार नागरिक बनने में सहायता कर सकते हैं।

(*स्वामी विवेकानंद का संपूर्ण साहित्य/ भाग ३/ कोलंबो से अल्मोड़ा तक/ भारतीय जन जीवन में वेदांत का उपयोग)

**हम अपने पिताओं को कितनी अच्छी तरह जानते हैं? (एक मजेदार प्रश्नोत्तरी, रांची से विवेक पटेल द्वारा)**

**प्रश्नोत्तरी के उत्तर अंतिम पृष्ठ पर ...**

१.___ का जन्म भारत के पश्चिमी तट में हुआ था और उन्होंने 'अल्फ्रेड उच्च विद्यालय' एवम 'इनर टेम्पल' में शिक्षा ग्रहण की। प्रायः इनको बीसवीं शताब्दी के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक माना जाता है। हम उन्हें प्रसिद्धि से ___ के रूप में जानते हैं।

२. _____ को हिन्दू परंपरा में श्रद्धापूर्वक धन्वन्तरि का वंशज माना जाता है। २००० वर्ष पूर्व वह प्राचीन नगर काशी, जो आज उत्तर भारत में वाराणसी या बनारस के नाम से जाना जाता है, में रहते थे। ____ संहिता सबसे विशिष्ट पुरातन चिकित्सीय आलेखों में से है और भारत के चिकित्सा सम्बन्धी परंपरागत मूल ग्रंथों में से एक है। उन्हें _____ का पिता भी माना जाता है।



विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ वैल्यूज़ (वीवा)
पार्क अस्पताल रोड, सेक्टर ४७ , गुरुग्राम, १२२०१८
values.viva@gmail.com

# विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ वैल्यूज़ (वीवा)

## सभी के लिए व्यावहारिक आध्यात्मिकता

### "भारतीय पुनरुत्थान के पिता"- गुरुग्राम से श्रीमती उमा कैकिनी

ईश्वर अपने कार्यकर्ताओं को उस समय भेज देते हैं जब संभावना ही न हो। राजा राम मोहन रॉय का जन्म १७७२ एक रूढ़िवादी बंगाली परिवार में उस समय हुआ जब भारत धर्म की विकृत समझ की चपेट में था। उस समय अंग्रेज़ गर्व से हमारी सभ्यता और संस्कृति में निरंतर गलतियाँ निकाल-निकाल कर प्रकाशित करते हुए अपने पैर जमा रहे थे।

क्या हम १५००-१७०० के युग की कल्पना कर सकते हैं जब सती-प्रथा (विधवाओं का अपने पति की चिता में जलकर भस्म होना) जिसके विषय में सुनते हैं कि पहली बार गुप्त साम्राज्य में नेपाल के पास दिखाई पड़ी और फिर कई सदियों में मध्य-प्रदेश, राजस्थान, बंगाल और अन्य राज्यों में फैलती चली गई। यह प्रथा क्षत्रिय राजपरिवारों में प्रचलित थी जिसे, शत्रुओं के हाथों अपमान से बचने के लिए, वीरगति को प्राप्त सैनिकों की विधवाएँ स्वेच्छा से स्वीकारती थीं। समय के साथ इस प्रथा का आरंभिक उद्देश्य खो गया और यह एक निष्ठुर एवं क्रूर समाज का अभिशाप बनकर रह गई।

यह तो राजा राम मोहन रॉय का सक्रिय अनुनय था जिस कारण १८२९ में सती प्रथा को लॉर्ड विलियम बेंटिंक द्वारा इसे न्याय विरुद्ध और दंडनीय घोषित कर समाप्त कर दिया गया। राजा राम मोहन रॉय के लिए बहु-विवाह प्रथा, जाति के आधार पर भेदभाव एवं बाल-विवाह अत्यंत निंदनीय थे और वह हिन्दू विधवाओं के पुनर्विवाह को प्रोत्साहन देते थे। सदियों पहले उन्होंने स्त्रियों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया और संपत्ति पर नारियों के उत्तराधिकार की भी मांग की। समाज में सती जैसी स्वीकृत प्रथा के विरुद्ध खड़े होने और उसे समाप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प एवं बहुत साहस लगा होगा। हम श्रद्धा एवं कृतज्ञता पूर्वक नमन करते हैं ऐसी दिव्य आत्मा का जिन्होंने बहनों और माताओं की पीड़ा को अनुभूत कर नारी के आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना को अपने जीवन का एक मात्र लक्ष्य बना लिया और यही नहीं बल्कि देश हित के लिए अपने विशेषाधिकार एवं शिक्षा का सही उपयोग किया।

स्वामी विवेकानंद राजा राम मोहन रॉय के प्रशंसक थे। वह भी बाल-विवाह एवं नारियों के प्रति निर्दयता का विरोध करते थे। वह चाहते थे कि भारतीय चिंतन कर अपने में परिवर्तन लाएँ, इसलिए नहीं कि अंग्रेज़ हमारी रीतियों को घिनौना मानते थे बल्कि इसलिए कि हम तामसिक एवं मूर्खतापूर्ण अंधविश्वासों में गिर चुके थे। स्वामी विवेकानंद प्रभावी संस्थान निर्माण के माध्यम से भारतीयों द्वारा 'मूल और शाखा' सुधार चाहते थे । हम, विवेकानंद मूल्य संस्थान में, उन्हें गौरवान्वित करने कि आशा रखते हैं ।

### Quiz Continued.....

३. अहमदाबाद के एक उद्योगपति के परिवार में जन्मे ___ ने पूर्वस्नातकीय शिक्षा एवं डॉक्टर की उपाधि इंग्लैंड के कैंब्रिज विश्वविद्यालय से प्राप्त की और १९४७ में भारत वापिस लौटे। 'इन्कोस्पार', 'आई आई एम'-अहमदाबाद और अन्य संस्थाओं के स्थापन में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। इन्हें ____ के पिता के रूप में याद किया जाता है।

४. कालिकट के एक सीरियन ईसाई परिवार में ____ का जन्म हुआ। मिशिगन के विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में एम.एस की डिग्री प्राप्त कर यह १९४९ में भारत लौटे और गुजरात गए जहाँ इन्होंने एक ऐसी कल्पना की जिससे, अमेरिका को पीछे छोड़कर, भारत ____ का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया। इन्हें भारत के ____ के पिता के रूप में भी जाना जाता है।

५. मुंबई के एक प्रतिष्ठित पारसी परिवार में इनका जन्म हुआ। यह 'टाटा मूलभूत अनुसन्धान संस्थान (टीआईएफआर) के संस्थापक निदेशक थे और वहीं भौतिक विज्ञान के प्राध्यापक भी थे । इन्हें 'भारतीय परमाणु कार्यक्रम' का पिता भी माना जाता है। इन्हें पहचानिये।

६. कुम्बकोनम (वर्तमान तमिलनाडु) में इनका जन्म हुआ और तिरुवनंतपुरम एवं मद्रास के विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात यह दिल्ली के 'भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान' में आए। कृषि के क्षेत्र में कार्य के लिए 'विश्व खाद्य पुरस्कार' के यह पहले प्राप्तकर्ता हैं। इन्हें 'हरित-क्रांति' के पिता के रूप में भी जाना जाता है।इन्हें पहचानिये।



विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ वैल्यूज़ (वीवा)
पार्क अस्पताल रोड, सेक्टर ४७ , गुरुग्राम, १२२०१८
values.viva@gmail.com

# विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ वैल्यूज़ (वीवा)

## सभी के लिए व्यावहारिक आध्यात्मिकता

७. इन्हें आयुर्वेद के पिता के रूप में जाना जाता है और प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान का पिता भी माना जाता है। चिकित्सा पर एक बहुत विख्यात पुस्तक के ये लेखक हैं जिसके शीर्षक में इनका नाम है। राजा कनिष्क के समय में इन्हें 'राज वैद्य' नियुक्त किया गया था। इनकी पुस्तक _____ संहिता में इन्होंने ३४० वनस्पति के प्रकारों एवं २०० जंतुओं के प्रकारों के विषय में लिखा है। इन्हें पहचानिये।

८. अंतराष्ट्रीय क्रिकेट खेलने वाले यह पहले भारतीय थे और इन्होंने १८९६ से १९०२ तक इंग्लैंड के लिए खेला। इनकी गुणवत्ता के कारण इन्हें इनके युग के महत्तम बल्लेबाज़ों में से एक माना जाता है। भारत की 'प्रथम श्रेणी क्रिकेट प्रतियोगिता' का नाम इनपर रखा गया है। वह भारतीय क्रिकेट के पिता के रूप में भी जाने जाते हैं। कौन हैं यह?

९. व्यवसाय का आरम्भ इन्होंने फ़ोटोग्राफ़र बनकर किया और फिर 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग' में ड्राफ़्ट्समैन का कार्य करने के पश्चात इन्होंने अपना व्यापार खोला। 'लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट' एक मूक फीचर फिल्म देखने के पश्चात ४० वर्ष की आयु में इन्होंने फिल्में बनाने का निर्णय लिया जिसका इनके परिवार ने विरोध किया। आशा न खोते हुए यह आगे बढ़ते रहे और १९१३ में इन्होंने भारत की पहली फुल लेंथ फीचर फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' निकाली। इन्हें पहचानिये जिन्हें भारतीय सिनेमा का पिता भी माना जाता है।

१०. यह एक भारतीय उद्योगपति थे जिन्होंने भारत का पहला इस्पात संयंत्र, भारत का पहला बिजली संयंत्र, भारत का अपना उच्च वैज्ञानिक शिक्षा संस्थान एवं भारत का पहला लक्ज़री होटल बनाया। इनके पथ प्रदर्शक कार्यों के लिए इन्हें भारतीय उद्योग का पिता भी माना जाता है। पहचानिये इन्हें।

## मेरी समझ के अनुसार पितृत्व का अर्थ (सिंगापुर से श्रीमती संध्या अय्यर)

पितृत्व चित्रित करता है त्याग, स्नेह एवं पालन पोषण।संतान के पालन-पोषण में पिता के धर्म के सही निर्वाह का बहुत महत्व है। एक पिता, अपने बीते जीवन को पुनः अनुभव करते हैं और प्रायः अनजाने में, अपने स्वप्नों की पूर्ति संतान के द्वारा होने की आशा करते हैं तब वह अपनी संतान को आजीवन आश्रय के लिए एक निवेश की तरह देखना प्रारम्भ करते हैं। हालाँकि इस संकुचित विचार के परे जब एक पिता अपनी संतान का आलिंगन करते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और अपना समय और ध्यान संतान को देते हैं, वह सौभाग्यशाली बच्चा बड़ा होकर एक ऐसा युवक बनता है जो अंततः पिता के लिए मित्र की तरह होता है एवं पिता की रक्षा अपने पुत्र के समान करता है।
स्वामी विवेकानंद ने कहा है, "आप एक पौधे को अनुपयुक्त मिट्टी में नहीं उगा सकते। एक बच्चा स्वयं को सिखाता है। किन्तु आप, उसे अपने ढंग से, अग्रसर होने में सहायता कर सकते हैं। आप जो कर सकते हैं वह सकारात्मक प्रकृति का नहीं अपितु नकारात्मक है। आप निश्चय ही बाधाओं को हटा सकते हैं परन्तु ज्ञान उसकी स्वयं की प्रकृति से ही बाहर आता है। मिट्टी को थोड़ा ढीला करिये तो संभवतः यह सहजता से बाहर आ सके। चारों ओर बाड़ लगाइये, देखिये कि कुछ भी इसे नष्ट न कर सके और तब आपका कार्य समाप्त होता है। इससे अधिक आप कुछ नहीं कर सकते। बाक़ी उसकी स्व-प्रकृति की भीतर से अभिव्यक्ति मात्र है।" ऐसे पिता अपनी संतान के जीवन में एक आदर्श और प्रेरणास्रोत बन सकते हैं।

## वीवा गतिविधियां- कार्यक्रम एवं सूचनाएँ

१. हम हर्ष से घोषित करते हैं कि वीवा के कार्यालय ने ०१/०५/२०२३ से विधिवत रूप से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया और तबसे, १ मास की लघु अवधि में, अनेक कार्यक्रमों एवं समारोहों का आयोजन किया गया। प्रारम्भ हुआ महिलाओं के लिए कार्यशालाओं से- 'कल्याणी-प्रबुद्ध नारी' और फिर वरिष्ठ नागरिकों के लिए 'स्वराट-आनंद में जीना'। साथ ही जून मास में साप्ताहिक सत्रों को जारी रखने की हमारी योजना है। (अधिक जानकारी के लिए कृपया लिखिए values.viva@gmail.com पर)

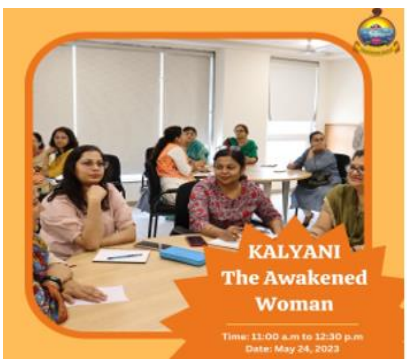

विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ वैल्यूज़ (वीवा)
पार्क अस्पताल रोड, सेक्टर ४७ , गुरुग्राम, १२२०१८
values.viva@gmail.com

# विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ वैल्यूज़ (वीवा)

## सभी के लिए व्यावहारिक आध्यात्मिकता

२. श्रद्धेय स्वामी शांतात्मानंद जी ने २० एवं २१ मई ,२०२३ को गुरुग्राम के लोगों को सार्वजनिक सभाओं में सम्बोधित किया जिनमें उन्होंने सबको वीवा द्वारा आरम्भ किये गए मूल्यों से सम्बंधित कार्यक्रमों से अवगत कराया। अपेक्षा अनुसार इसकी प्रक्रिया प्रभावशाली रही और बहुत लोगों ने इस कार्यक्रम के विषय में जिज्ञासा व्यक्त की। (अधिक जानकारी के लिए कृपया हमारे वेबसाइट को देखिये- @https://viva.rkmm.org/ )

३. 'एन टी पी सी' विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए कार्यशाला 'पी एम आई' नॉएडा में सफलता पूर्वक संपन्न हुई। इस कार्यशाला में हमारे दल, जिसका नेतृत्व श्रद्धेय स्वामी शांतात्मानंद जी ने किया, का अत्यंत प्रशंसनीय पारस्परिक विचार विमर्श हुआ। MOU के नवीनीकरण के लिए की गई बैठक अच्छी चली और हमारा विवा का दल 'एसीपी' एवं 'जागृति' कार्यक्रमों को अब एक नए जोश से कार्यान्वित करने की आशा करता है |

४. राजस्थान शिक्षा पहल (REI) द्वारा एक बैठक रखी गई थी उन कार्यों का वार्षिक पुनरावलोकन करने के लिए जो उनके सहयोगियों द्वारा कार्यान्वित हुए जिनमें रामकृष्ण मिशन भी एक संस्था है जो राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद (RCSE) के ४५० विद्यालयों में 'एसीपी' कार्यक्रम को लागू करने के लिए RCSE के साथ समझौता ज्ञापन (MOU) के अंतर्गत है। इस बैठक की अध्यक्षता माननीय शिक्षा राज्य मंत्री, श्रीमती ज़ाहिदा ख़ान द्वारा निभाई गई। विवा दल का नेतृत्व श्री धर्मेंद्र पांडे ने किया और उन्होंने प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया। पुनरावलोकन करने वाले REI के समक्ष हमने उन सब बाधाओं को रखा जिनका सामना विवा एवं रामकृष्ण मिशन इस कार्यक्रम के निर्विघ्न कार्यान्वन में कर रहे थे। इस प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण के पश्चात, REI के सहयोगियों को, आने वाले शैक्षिक वर्षों में पहले से अच्छे समर्थन के लिए आश्वस्त किया गया।

विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ वैल्यूज़ (वीवा)
पार्क अस्पताल रोड, सेक्टर ४७ , गुरुग्राम, १२२०१८
values.viva@gmail.com

# विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ वैल्यूज़ (वीवा)

## सभी के लिए व्यावहारिक आध्यात्मिकता

### स्वामी शांतात्मानंद से पूछें

***एक पाठक लिखतें हैं***

मैं अपने काम के तनाव, अपने माता-पिता की अस्वस्थता, एक चिड़चिड़ी पत्नी और एक ऑटिस्टिक बच्चे का सामना करने में असमर्थ हूँ। मैं अक्सर सवाल करता हूँ कि क्या कोई भगवान है भी या नहीं। कृपया परामर्श दें।

***स्वामी शांतात्मानंद उत्तर देते हैं:***

आध्यात्मिकता या ईश्वर में विश्वास हमारी सभी अस्तित्वगत समस्याओं को हल नहीं करेगा। वे हमें लचीलापन विकसित करने और जीवन के क्षणभंगुरता या नश्वरता को समझने में मदद करेंगे। यहां तक कि जर्मन कंसंट्रेशन कैम्प्स/जर्मन यातना शिविरों में भी आध्यात्मिक झुकाव वाले लोग बेहतर तरीके से सामना कर सकते थे। व्यक्ति को शांति से सोचना चाहिए, जीवन को ऐसे ही स्वीकार करना चाहिए और यथासंभव सकारात्मक रहने का प्रयास करना चाहिए। उम्र के आधार पर यह पता लगाना आसान है कि जीवन क्या है। सेवा की सच्ची भावना के साथ बीमार माता-पिता और ऑटिस्टिक बच्चे की देखभाल करने की कोशिश करने से शांति और खुशी मिलेगी। नौकरी के संबंध में यह पता लगाना होगा कि यह तनावपूर्ण क्यों है। रिश्ते सुधारने के लिए यह अपनी पत्नी के साथ शांति से बैठकर चर्चा कर सकते हैं। अंतिम समाधान आध्यात्मिक जीवन को अधिक गंभीरता से लेने में निहित है। दुनिया नहीं बदलेगी लेकिन हम अपनी विश्वदृष्टि को बदल सकते हैं।

### पिछले अंक से पाठक के अनुभाग का उत्तर

***दिल्ली से मालविका घोष लिखती हैं:***
इस चित्र में हिरण और उसके शिशु के खड़े होने का ढंग माता के वात्सल्य और शिशु के प्रेम को दर्शाता है। माता अपने शिशु की रक्षा कर रही है। इन्हें घेरे हुए यह ऊँचे-ऊँचे पेड़ मानो इन पशुओं के जीवन के लिए रक्षात्मक छाया प्रदान कर रहे हैं। मैं इसमें रक्षा की कई तहें देखती हूँ और हम सब हाथ पकड़कर उनकी सहायता कर सकते हैं जो हमसे निर्बल हैं और मिलकर, सुख से साथ-साथ रह सकते हैं

***सिंगापुर से संध्या अय्यर लिखती हैं:*** हिरण का चित्र मुझे उस स्नेह, देखभाल एवं संरक्षण से जोड़ देता है जो संतान को अपने माता-पिता से मिलता है, जिसे सदा मैंने अपने माता-पिता से प्राप्त किया है और उनके बाद स्वामी शान्तात्मानंदजी से।

***गुरुग्राम से उमा कैकिनी लिखती हैं:*** पूरी बीहड़ भूमि में माँ और उसका बछड़ा.....जीवित रहने और कुशल बनाने के लिए बछड़े का माँ में स्नेहपूर्ण विश्वास एवं आत्मसमर्पण है। अपने शिशु के प्रति संपूर्ण उत्तरदायित्व के कारण माँ का प्रेम उमड़ रहा है। हमने इन्हीं भावनाओं को अपने भौतिक माता-पिता के साथ साँझा किया और समय बीतने पर अब उस दिव्य ईश्वर के साथ साँझा कर रहे हैं।

**उल्टे क्रम में प्रश्नोत्तरी के उत्तर:**

**१०. जमशेदजी नौशेरवांजी टाटा**
**९. दादासाहब फालके**
**८. रणजीतसिंह जी विभाजी II (नवानगर के महाराजा)**
**७. चरक**
**६. डॉ एम एस स्वामीनाथन**
**५. होमी जहांगीर भाभा**
**४. डॉ वर्गीस कुरियन, दुग्ध, श्वेत क्रांति**
**३. विक्रम साराभाई, भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम**
**२. सुश्रुत, सुश्रुत, शल्य चिकित्सा**
**१. मोहनदास करमचंद गाँधी, राष्ट्र-पिता**

### पाठक का अनुभाग

क्या आप किसी उल्लेखनीय पिता के बारे में जानते हैं? क्या आप साझा करना चाहेंगे कि आपको क्यों लगता है कि वह विशेष है? कृपया अपनी प्रतिक्रियाएँ नीचे दिए गए ईमेल पर भेजें जिसका शीर्षक 'पाठकों के अनुभाग का उत्तर' होगा।



विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ वैल्यूज़ (वीवा)
पार्क अस्पताल रोड, सेक्टर ४७ , गुरुग्राम, १२२०१८
values.viva@gmail.com